संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०२३
वर्ष : ३३ अंक : ६ (निरंतर अंक : ३७२)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पर्यावरण सुरक्षा विशेषांक

जब समुद्र-मंथन हुआ था तो भगवान श्रीविष्णु अमृत का घड़ा लेकर धन्वंतरिजी के रूप में प्रकट हुए थे।

उस अमृत के घड़े को देखते-देखते उनके हर्ष के आँसुओं की एक बूँद उस घड़े में गिरी।

उससे तुलसी प्रकट हुई थीं।

तुलसी उपनिषद् में आता है :

ब्रह्मानन्दाश्रुसञ्जाते।
'हे तुलसी ! तुम ब्रह्मानंदरूप आँसुओं से उत्पन्न होनेवाली हो।'

अमृतोपनिषद्रसे।
'तुम अमृतरूपी उपनिषद्-रस हो।'

अवृक्षवृक्षरूपासि वृक्षत्वं मे विनाशय।
'अवृक्ष (चैतन्यरूप) होते हुए भी तुम वृक्षरूप में दिखाई देती हो, मेरे वृक्षत्व (जड़ता) का विनाश करो।'

तुलसी पूजन दिवस : एक विश्वव्यापी आयोजन

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की अनूठी पहल तुलसी पूजन दिवस : २५ दिसम्बर ११

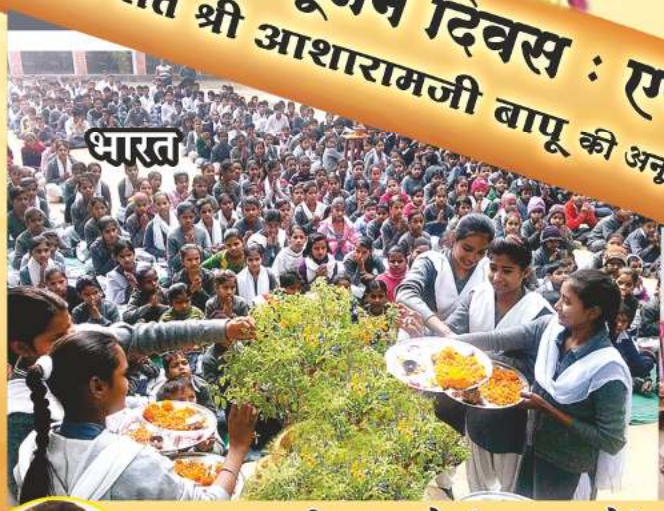

पूज्य बापूजी आपको (समाज को) दुर्लभ योग विद्या, गोपनीय ब्रह्मविद्या व आरोग्यदायी आयुर्वेद का ज्ञान दे रहे थे। आपका ऐसा उत्थान जिन्हें रास नहीं आया उनके द्वारा आपको बापूजी से दूर रखा गया है। - महंत पवनकुमारदास शास्त्री, महामंत्री, अयोध्या संत समिति

आशारामजी बापू को फँसाया गया है।
- स्वामी श्री आनंद स्वरूपजी, अध्यक्ष शंकराचार्य ट्रस्ट २६

यह रामराज्य की संकल्पना के विरुद्ध है, इसे रोका जाना चाहिए। ९
- श्री देवकीनंदन ठाकुर, भागवत कथाकार

धरती के तापमान में १.५ डिग्री की होगी वृद्धि ४

क्या हैं सबसे खतरनाक प्रदूषण व कैसे हो उसका निवारण २७

शीत ऋतु में बल-संवर्धन के लिए पुष्टिदायी प्रयोग ३१

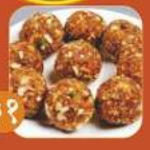

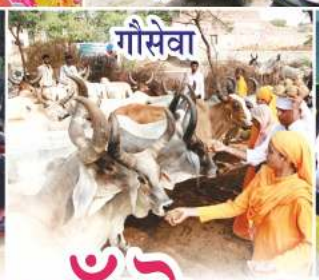

सुख बाँटो, आत्मसंतोष पाओ - पूज्य बापूजी

अपना मंगल चाहते हो तो दूसरों की भलाई करो, दूसरों के मंगल में लग जाओ। जो दोगे वही घूमकर तुम्हारे पास आयेगा। शास्त्र के अनुरूप, धर्म के अनुरूप दूसरों के मंगल में लग जाओ। जो दूसरों के मंगल में लग जाता है, क्या उसका अमंगल हो सकता है ? अमंगल टिक सकता है ? उस व्यक्ति का दुःख कभी नहीं मिट सकता जो खुद को सुखी रखना चाहता है। यह क्रांतिकारी वचन है। बिल्कुल पक्की बात है। उस व्यक्ति का दुःख कभी नहीं मिट सकता जो अपने सुख के लिए ललकता है। अपने सुख की ललक छोड़कर आप दूसरों के दुःख मिटाने में लग जाओ, दुःखहारी की सत्ता आपको निर्दुःख कर देगी।

अपने दुःख में रोनेवाले ! मुस्कराना सीख ले।
औरों के दुःख-दर्द में, आँसू पोंछना सीख ले ॥
आप खाने में मजा नहीं, जो औरों को खिलाने में है।
जिंदगी है चार दिन की, तू किसीके काम आना सीख ले ॥

उपभोग करके बाहर का सुख भीतर भरने से आप बोझीले हो जाओगे। बाहर के सुख का सदुपयोग करो और अंदर के सुख को जागृत करो। आप सुख अंदर मत भरो, अंदर के सुख को बाहर बिखेरो। सुख बाँटो, आत्मसंतोष पाओ। सुख आधिभौतिक है, आत्मसंतोष आध्यात्मिक है। बाहर से सुख लेने की इच्छा मत करो, बाहर सुख बाँटने का कार्य करो; मान लेने की इच्छा मत करो, मान के योग्य कर्म करो और दूसरों को मान दो तो आप स्वतंत्र हो जाओगे, सुखी हो जाओगे, चिरआदरणीय हो जाओगे।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३३ अंक : ६ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३७२
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०२३
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
मार्गशीर्ष-पौष, वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स'** (Hari Om Manufactureres) **के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'पर्यावरण सुरक्षा विशेषांक' में...

❖ समसामयिक
✻ धरती के तापमान में १.५ डिग्री की होगी वृद्धि - मनोज मेहेर ४
❖ इधर पीपल कटा, उधर बेटा मरा ६
❖ जनता की आवाज ✻ घोर अन्याय के अंत के लिए... ८
❖ यह रामराज्य की संकल्पना के विरुद्ध है... - श्री देवकीनंदन ठाकुर ९
❖ विश्वचर्चित वार्ता ✻ ग्लोबल वॉर्मिंग समस्या... - धर्मेन्द्र गुप्ता ९
❖ मंगलमय संदेश ✻ मंगलकारी तुलसी पूजन दिवस कैसे मनायें ? ११
❖ तुलसी का यह चमत्कार देख वैज्ञानिक रह गये हैरान ! १३
❖ पर्व मांगल्य ✻ मकर संक्रांति कैसे मनायें ? १३
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग
✻ मिला गुरुवर का सहारा, बदली चिंतन-धारा - शुकदेव शर्मा १५
✻ हिंसक प्राणी भी हो जाते हैं अहिंसक १६
❖ देशभर में उत्साह-उमंगपूर्वक चल रहा है 'वृंदा अभियान' १६
❖ विद्यार्थी संस्कार ✻ ठान ले और उससे हटे नहीं तो... १८
✻ विद्यार्थी शिविर व गुरुकुल-शिक्षा से सँवरा जीवन - सत्यमस्वरूप महांत १९
❖ सेवा संजीवनी ✻ प्रतिकूलता सिखा गयी सेवा में दृढ़ता का पाठ १९
❖ देश-विदेश ✻ क्रिसमस के दिनों में बढ़ती है नशाखोरी : सर्वेक्षण - अलख महता २०
❖ भजनामृत ✻ दुःखों से अगर चोट खायी न होती... - संत पथिकजी २१
❖ तत्त्व दर्शन ✻ आत्मा को किससे प्रमाणित करोगे ? - स्वामी अखंडानंदजी २२
❖ संत श्री आशारामजी आश्रम व गुरुकुल को किया गया सम्मानित २३
❖ एकादशी माहात्म्य ✻ भक्ति, मुक्ति, शांति व सफलता देनेवाला व्रत २४
❖ भेंटवार्ता ✻ आशारामजी बापू निश्चितरूप से बाहर आयेंगे - स्वामी श्री आनंद स्वरूपजी २६
❖ संस्था समाचार ✻ आत्मसाक्षात्कार दिवस पर बही जनहित की गंगा २६
❖ सबसे खतरनाक प्रदूषण व कैसे हो उसका निवारण - रू.भा. ठाकुर २७
❖ दीपावली समाचार ✻ गुरुज्ञान के प्रकाश से रोशन हुई दिवाली ३०
❖ स्वास्थ्य समाचार ✻ शीत ऋतु में बल-संवर्धन के लिए पुष्टिदायी प्रयोग ३१
✻ शीत ऋतु हेतु पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य-प्रसाद ३१
✻ स्वास्थ्य-हितकारी आँवला, तुलसी, पीपल व नीम ३२
❖ ताजा खबर ✻ वैज्ञानिकों ने उजागर किये गोहत्या के घातक परिणाम ३३
❖ अनमोल कुंजियाँ
✻ वृक्षारोपण से होती अक्षय लोक की प्राप्ति व कुल का उद्धार २२
✻ इस प्रयोग से होगी उम्र लम्बी २५
✻ धन-सम्पदा प्रदायक व मनोकामना पूर्ण करनेवाले पूजनीय वृक्ष ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी
Asharamji Bapu
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु)
Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

इधर पीपल कटा, उधर बेटा मरा

(एक सत्य घटना पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

पिलखुवा गाँव, जि. हापुड़ (उ.प्र.) के पास की घटना है । दलवीर खाँ नामक एक मुसलमान बढ़ई ने १०० रुपये में किसी राजपूत से एक हरा पीपल का वृक्ष खरीदा । इस सौदे में इसाक खाँ नामक दूसरा बढ़ई हिस्सेदार था । दोनों ने सोचा कि इसे काट-बेचकर जो धन आयेगा उसे बराबर भागों में दोनों बाँट लेंगे ।

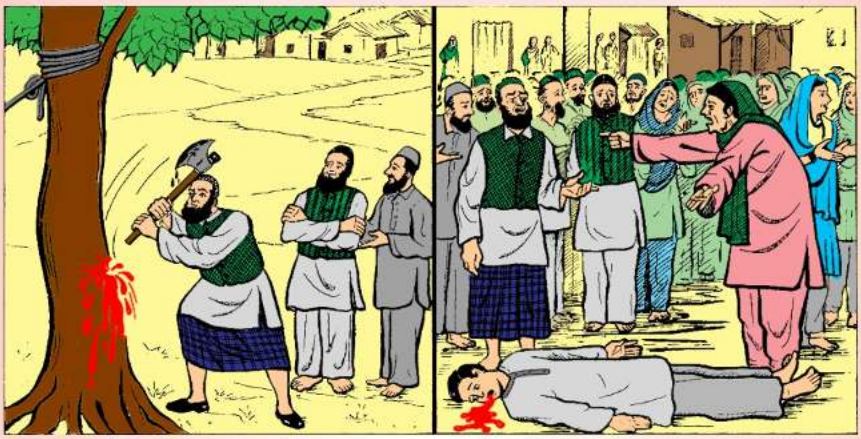

वृक्ष में जान होती है और कभी किसी कारण से ऊँची आत्माओं को वृक्ष की योनि में भी आना पड़ता है । वे आत्माएँ समझदार और कार्यशील होती हैं ।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है :

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां... अर्थात् मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ । **(गीता : १०.२६)**

पीपल की जीवात्मा दलवीर खाँ के स्वप्न में आयी । पीपल कह रहा था : ''तुम मुझे काटनेवाले हो, मेरी मृत्यु हो जायेगी । तुमने मुझे १०० रुपये में खरीदा है और जो भी मुनाफा होगा वह सब मैं तुम्हें लौटा देता हूँ । मेरी जड़ में एक जगह तुम खोदोगे तो तुमको सोने की शलाका मिलेगी । उसे बेचकर तुम्हें जो मुनाफा होगा उससे तुम्हारा सारा खर्च निकल जायेगा । इसलिए कृपा करके मुझे कल काटना मत । मुझे प्राणों का दान देना ।''

दलवीर खाँ को इस स्वप्न पर विश्वास नहीं हुआ । फिर भी उसने उस बात को आजमाने के लिए स्वप्न में जहाँ खोदने के लिए संकेत मिला था वहाँ खोदा तो सचमुच सोने की एक शलाका निकल आयी । वह अपनी अपार खुशी को गुप्त न रख सका और बीबी को जाकर बता दिया । बीबी भी आश्चर्यचकित हो उठी । दलवीर खाँ ने सोचा कि 'यह बात यदि अपने मित्र को बता दूँगा तो सोने की शलाका के आधे भाग की वह माँग करने लगेगा ।'

वह मानवता से च्युत हो गया और आधा हिस्सा बचाने के लोभ में शलाकाप्राप्ति की घटना को छुपाये ही रहा । जब इसाक खाँ उसके पास आया तब उसके साथ वह पीपल काटने के लिए चल पड़ा ।

दलवीर खाँ ने मानवता को दूर रख दिया । निःस्वार्थता, लोभरहितता व निष्कामता मनुष्य को देवत्व प्रदान करती है जबकि स्वार्थ और लोभ मनुष्य को मनुष्यता से हटाकर दानव जैसी दुःखदायी योनियों में भटकाते हैं । जहाँ स्वार्थ है वहाँ व्यक्ति असुर हो जाता है और जहाँ निष्कामता है वहाँ उसमें सुरत्व (देवत्व) जाग उठता है । मनुष्य ऐसा प्राणी है जो चाहे तो सुर हो जाय, चाहे तो असुर हो जाय और चाहे तो सुर-असुर दोनों जिससे सिद्ध होते हैं उस सिद्धस्वरूप को पाकर जीवन्मुक्त हो जाय । यह मनुष्य के हाथ की बात है । वह अपने ही कर्मों से भगवान की पूजा कर सकता है और अपने ही कर्मों से कुदरत का कोपभाजन भी बन सकता है । अपने ही कर्मों से गुरुओं के अनुभव को अपना अनुभव बना

तुलसी का यह चमत्कार देख वैज्ञानिक रह गये हैरान !

– पूज्य बापूजी

तुलसी के अद्‌भुत गुण देखकर आज के विज्ञानी हैरान हैं । यूरोप की बात है । वहाँ के जंगल में एक शिकारी ने हिरण का शिकार किया फिर उसे कोई बात याद आ गयी, उसका मन बदल गया और वह घर चला गया । वहाँ से उसका एकाएक दूसरे गाँव जाना हुआ ।

३ दिन के बाद जंगल में आया कि 'देखें हिरण का क्या हुआ ?' वह देखता है कि 'हिरण के शरीर में कोई विकृति नहीं हुई है !' उसने जाकर डॉक्टरों को यह बात बतायी । फिर वैज्ञानिकों ने अनुसंधान किया । अनुसंधान में वहाँ के जंगली पौधे तुलसी के पौधे साबित हुए । वैज्ञानिकों ने बताया कि 'शव के पास तुलसी का पौधा रखने से ३–४ दिन तक मृत शरीर का क्षय नहीं होता है ।' डेटॉल या अन्य दवाइयों से जीवाणु (bacteria) नष्ट होते हैं परंतु तुलसी जहाँ होती है वहाँ हानिकारक जीवाणु पैदा ही नहीं होते ।

साँप का भय हो तो वहाँ प्याज रख दो, साँप नहीं आयेगा, भाग जायेगा, ऐसे ही जहाँ बीमारियों का भय हो उस घर में तुलसी के पौधे बढ़ा दो तो बीमारियाँ ज्यादा पैदा नहीं होतीं ।

मकर संक्रांति कैसे मनायें ?

१५ जनवरी को मकर संक्रांति का पर्व है । क्या है इस पर्व की विशेषता और इस दिन क्या करना चाहिए, क्या नहीं इस बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग–वचनामृत में आता है :

मकर संक्रांति को सूर्यनारायण मकर राशि में प्रविष्ट होते हैं । हर महीने एक–एक राशि बदलती है । कुछ लोग बोलते हैं कि 'सूर्य खड़ा है, पृथ्वी चलती है ।' परंतु भारतीय संस्कृति के महा मनीषियों ने कहा कि 'ऐसी कोई साकार वस्तु नहीं है जो स्थिर रहे । सबमें परिवर्तन होता है, सब चलरूप हैं ।'

पृथ्वी चलती है, ऐसे ही नक्षत्र आदि सब चलते हैं । अचल तो एक अचल तत्त्व है, बाकी जो भी साकार दिखता है वह स्थिर हो ही नहीं सकता ।

विज्ञान भले अपने तर्क देकर कुछ कहे परंतु हमें तो मति से परे तत्त्व में पहुँचे हुए महापुरुषों की बात पर ज्यादा भरोसा होता है । जो चलता है वह चलता ही रहता है और जो चलने को देखता है वह चलने से परे अचल आत्मा है । उस अपने अचल आत्मा में टिकने के लिए संकल्प दृढ़ करें ।

मकर संक्रांति के दिन स्नान, दान, जप, तप का प्रभाव ज्यादा होता है । यशोदाजी ने तेजस्वी संतानप्राप्ति के लिए उत्तरायण का व्रत किया था । उत्तरायण के दिन रात्रि का भोजन न करें तो अच्छा है किंतु जिनको संतान हैं उनको उपवास करना मना किया गया है । आज खाना नहीं खाते हैं किसलिए ? कि भगवान में मन लगे और जो पुत्रवान (बच्चेवाले) हैं उन्हें खाना चाहिए क्यों ? कि शास्त्र की आज्ञा है ।

सूर्यनारायण से क्या माँगें ?

तुलसीदासजी जैसे महान संत ने भी

भक्ति, मुक्ति, शांति व सफलता देनेवाला व्रत

७ जनवरी को सफला एकादशी है । इस व्रत से क्या लाभ होते हैं तथा रात्रि-जागरण क्यों और कैसे करना चाहिए इसका सुंदर विवेचन शास्त्रवेत्ता पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

सफला एकादशी : ७ जनवरी पर विशेष

राजा युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में प्रणाम करते हुए प्रार्थना की : ''पौष मास (अमावस्यांत मास अनुसार मार्गशीर्ष) के कृष्ण पक्ष की एकादशी का व्रत करने से क्या पुण्य होता है और उसकी विधि क्या है ?''

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''राजन् ! यज्ञ, तप, व्रत व बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ भी मुझे इतना प्रसन्न नहीं करतीं जितना एकादशी व्रत से मैं प्रसन्न होता हूँ । और कठोर तपस्याओं से व्यक्ति अपना कल्याण उतना नहीं कर सकता जितना एकादशी व्रत से कर सकता है ।

पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को 'सफला एकादशी' कहते हैं । यह भक्ति, मुक्ति, शांति व सफलता रूपी फल को अपने में सँजोये हुए है । जैसे नागों में शेषनाग, पक्षियों में गरुड़ तथा देवताओं में श्रीविष्णु श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण व्रतों में एकादशी श्रेष्ठ है । इस एकादशी को भगवन्नामयुक्त मंत्रों का उच्चारण करते हुए नारियल, नींबू, अनार, आँवला, बेर, लौंग आदि से भगवान नारायण की पूजा करनी चाहिए ।

इस दिन दीप जलाना यानी दीपदान करना पुण्यदायी माना गया है तथा रात्रि-जागरण विशेष हितकारी है । हजार वर्ष की तपस्या से उस फल की प्राप्ति नहीं होती, वह लाभ नहीं होता जो इस दिन ध्यान-जप करते हुए रात्रि-जागरण (१२ बजे तक) करने से हो जाता है । यह एकादशी पापों को क्षय करनेवाली और भगवद्भक्ति में मदद करनेवाली है ।

एकादशी के प्रभात को उठकर या तो जब स्मृति आये तब संकल्प करना चाहिए कि 'आज मैं एकादशी का व्रत रखूँगा, अपने नियम में दृढ़ रहूँगा । श्रीहरि, भगवान अंतर्यामी मेरी रक्षा करेंगे, मेरे संकल्प को सफल करने में सहायता देंगे ।'

नृपश्रेष्ठ ! अब सफला एकादशी की कथा सुनो । चम्पावती पुरी राजा माहिष्मत की कभी राजधानी थी । उसके ५ पुत्र थे । उनमें ज्येष्ठ पुत्र बड़ा दुष्ट स्वभाव का था । वह दुराचारी मांसाहार करता और परस्त्रीगामी व वेश्यासक्त था । राजा ने उसका नाम लुम्भक रख दिया । उसके कुकर्मों से दुःखी होकर भाइयों और पिता ने उसे देश-निकाला दे दिया । लुम्भक भटकता-भटकता गहन वन में चला गया । जंगल में एक पुराना पीपल का वृक्ष था । देहाती लोग उसे महान देवता मानते थे । लुम्भक उस वृक्ष के निकट ही पड़ा रहता था । जंगल में चांडाल लोग जैसे शिकार करते हैं ऐसे शिकार करके या फल खा के पेट भरता था ।

एक दिन उसके संचित पुण्यों का उदय हुआ और जाने-अनजाने उससे पौष मास की सफला एकादशी का व्रत हो गया । दशमी को कुछ फल खाये और वस्त्रहीन होने के कारण रात को ठंड में

क्या है सबसे खतरनाक प्रदूषण व कैसे हो उसका निवारण

वर्तमान में विश्व में सबसे प्रमुख व घातक प्रदूषण, जिस पर बहुतों का ध्यान बहुत कम है, वह है वैचारिक प्रदूषण । कुछ मनीषियों का कहना है कि समाज के सामने खड़ी विकराल समस्याओं के हल के लिए विश्व के विभिन्न देशों द्वारा बड़े-बड़े कायदे-कानून बनाये जाते हैं, पानी की तरह पैसा बहाया जाता है फिर भी अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाती, इसका क्या कारण है यह चिंतन करने योग्य विषय है ।

व्यक्ति की जैसी विचारधारा होती है उसीके अनुरूप उसका कर्म होता है और फिर वैसा ही परिणाम प्राप्त होता है । चिंता, अशांति, अवसाद (depression) जैसी व्यक्तिगत समस्याएँ हों या आपसी कलह, मनमुटाव, झगड़ाखोरी जैसी पारिवारिक उलझनें, भ्रष्टाचार, अनाचार, डकैती, घोटाले जैसी सामाजिक समस्याएँ हों अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गुत्थियाँ - सभीका मूल कारण है विचारधारा की विकृति... मनुष्य की स्वार्थपूर्ण, भोगी एवं संकुचित मनोवृत्ति ।

शरीर की व्याधि मिटाने के लिए जितनी सतर्कता जरूरी है उससे आधी सतर्कता मन के रोग को निवृत्त करने में हो तो तन-मन दोनों स्वस्थ रहते हैं । उससे भी कम मेहनत यदि आधि-व्याधि में फँसानेवाली अविद्या को मिटाने के लिए की जाय तो जीव सदा के लिए मुक्त हो जाता है ।

प्रज्ञापराध एव एष दुःखमिति यत् । लोग जिसे 'दुःख' कहते हैं वह प्रज्ञा का अपराध है माने समझ का दोष है ।

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''सारी मुसीबतों, दुःखों और कष्टों का मूल बुद्धि की अपरिपक्वता है । इसे शास्त्रीय भाषा में बोलते हैं :

प्रज्ञापराधो हि मूलं सर्वरोगाणाम् ।
प्रज्ञापराधो हि मूलं सर्वदोषाणाम् ।

सारे रोगों और दोषों का मूल है बुद्धि की नासमझी । जहाँ नासमझी है वहाँ दुःख है, जहाँ समझ है वहाँ सुख है ।

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥

(श्री रामचरित. सुं.कां. : ३९.३)

जितने भी दुःख हैं वे सब बुद्धि की मंदता से आते हैं । बुद्धि की मंदता से ही राग-द्वेष होता है । इस मंदता के कारण ही लोग इतने कीमती मनुष्य-जीवन को 'मेरे-तेरे' में गँवाकर अंत में निराश हो के मर जाते हैं ।

इस युग के मनुष्य की अशांति का कारण उसकी तमस-आच्छादित बुद्धि है । तमस से ढकी हुई बुद्धि पाप को पुण्य, दुःख को सुख, त्याज्य को ग्राह्य, अधर्म को धर्म बताती है, जिससे मनुष्य का जीवन दुष्प्रवृत्तियों में लग जाता है । तामसी बुद्धि से आसुरी प्रवृत्तियों को पोषण मिलता है, जिससे सभी विपरीत कर्म होने लगते हैं और सर्वत्र अशांति फैलती है । आज जहाँ भी अशांति बढ़ी हुई है, उसका कारण है वेदांत-ज्ञान को जीवन में सुदृढ़ करनेवाली जो वैदिक जीवन-प्रणाली है, उसमें बताये गये सत्संग, संयम, सदाचार, सत्त्वगुण की वृद्धि, परोपकार आदि जो शुभ कर्तव्य हैं उनसे विमुख होकर अनैतिक, स्वच्छंदी, भोगी-विलासी, स्वार्थी जीवनशैली को अपनाया जाना ।

अशांति कैसे मिटे ? सूर्योदय से पूर्व स्नान, भ्रूमध्य में तिलक, योगवासिष्ठ महारामायण,

प्रतिदिन हो रही हैं ९ लाख गोहत्याएँ

वैज्ञानिकों ने उजागर किये गोहत्या के घातक परिणाम

'ग्लोबल चेंज डाटा लैब' के ऑनलाइन प्रकाशन के अनुसार 'वैश्विक स्तर पर हर रोज लगभग ९ लाख गायों की हत्या होती है ।' यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है ।

गोवध से आतीं प्राकृतिक आपदाएँ

भारतीय संस्कृति के दूरद्रष्टा संत-महापुरुषों व शास्त्रों ने तो युगों से गाय की महत्ता उजागर करते हुए गौ को पूजनीय बताया है तथा गौ-पालन व गौ-संरक्षण की प्रेरणा दी है । वेद भगवान की आज्ञा है :

मा गामनागामदितिं वधिष्ट ।

'गौओं को न मारें ।'

(ऋग्वेद : मंडल ८, सूक्त १०१, मंत्र १५)

आज विज्ञान भी पशु-हत्या, गोहत्या से होनेवाले भयंकर दुष्परिणामों को उजागर कर रहा है । विशेषज्ञों का मानना है कि प्राणियों के कत्ल के समय उत्पन्न दारुण वेदना एवं चीत्कार से निःसृत तरंगें, जिन्हें आइंस्टीनियन पेन वेव्स भी कहते हैं, वे भूकम्प का कारण हैं ।

दिल्ली विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने शोध कर यह घोषित किया कि 'गाय-बैल आदि के कत्ल से भूकम्प का सर्जन होता है ।' इस तथ्य को दुनिया के अधिकांश वैज्ञानिकों ने मान्य किया ।

केवल भूकम्प ही नहीं, अनेक प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं, जैसे - बाढ़, अकाल, चक्रवात, सुनामी, महामारी आदि के लिए गोवध जिम्मेदार है ।

इस संदर्भ में कुछ वर्ष पूर्व केरल में आयी बाढ़ भी उल्लेखनीय है । २०१७ में केरल में बीच सड़क पर निर्दयी गोमांसभक्षियों द्वारा गाय के बछड़ों का कत्लेआम किया गया था । प्रशासन तो देखता रहा, मीडिया दिखाता रहा परंतु प्रकृति से सहन नहीं हुआ । एक वर्ष बाद वहाँ भयानक बाढ़ के रूप में प्रकृति का कोप हुआ ।

गोमांस-सेवन का पर्यावरण व स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव

गोहत्या के कारण प्राकृतिक आपदाएँ तो आती हैं, साथ ही गोमांस-भक्षण से पर्यावरण व शरीर-स्वास्थ्य पर भी घातक प्रभाव पड़ता है ।

'यूनाइटेड नेशन्स एनवायरनमेंट प्रोग्राम' (UNEP) ने कहा कि 'ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के मामले में एक किलो गोमांस-सेवन १६० कि.मी. तक किसी मोटरवाहन का इस्तेमाल करने के बराबर है ।' अनुसंधानों से पता चला है कि गोमांस खाने से 'मैड काऊ डिसीज' जैसी महाव्याधियाँ होती हैं । इतना ही नहीं, मस्तिष्क एवं चेतातंत्र में कम्पन पैदा होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक मानसिक रोग एवं विकृतियाँ पैदा होती हैं ।

गौरक्षा में सारी मानवता की रक्षा है

गोहत्याओं के दुष्प्रभावों को देखें तो यह सुस्पष्ट है कि गौ-रक्षण वर्तमान समय की महती आवश्यकता है । पूज्य बापूजी कहते हैं कि ''हम गाय का पालन-पोषण नहीं करते बल्कि वह तुम्हारा-हमारा पालन-पोषण और पर्यावरण की रक्षा करती है । अतः गौरक्षा हमारी आधारभूत आवश्यकता है । उसीमें स्वास्थ्य, मानवता, संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा है । गाय पालनेवाले के घर में जितनी तंदुरुस्ती होगी उतनी गाय का

₹ ९

तुलसी रहस्य

(सत्शास्त्रों तथा पूज्य बापूजी के संदेशों से संकलित)

तुलसी की बहूपयोगिता का लाभ लेने व दिलाने हेतु पढ़ें-पढ़ायें, जन-जन तक पहुँचायें।

श्रीचित्र-युक्त टाइल्स

घर के प्रवेशद्वारों, दीवालों तथा पूजाघर आदि में लगाने हेतु पूज्य बापूजी के चित्ताकर्षक एवं सत्प्रेरणा, सौभाग्य, समृद्धि व शांति प्रदायक श्रीचित्र वाली टाइल्स।

₹ ५०

जाहिदी खजूर पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

₹ १००
१ कि.ग्रा.

ये वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं। शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर हैं। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाले ये खजूर रक्त, मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं। इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

₹ ६००
५०० ग्राम

ब्राह्म रसायन जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाला एक उत्तम रसायन

इसके सेवन से शरीर की दुर्बलता और दिमाग की कमजोरी दूर होकर आयु, बल, कांति तथा स्मरणशक्ति की वृद्धि होती है। खाँसी, दमा (asthma), क्षयरोग (T.B.), कब्जियत आदि रोग दूर हो शरीर में स्थायी ताकत पैदा होती है। यह उत्तम रसायन होने के कारण जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाला है।

₹ २७०
५०० ग्राम

पौष्टिकता से भरपूर द्राक्षावलेह

शक्ति, चुस्ती व स्फूर्ति प्रदायक यह औषधि अरुचि, खून की कमी, शारीरिक कमजोरी एवं अम्लपित्त (hyperacidity) में लाभदायी है। यह यकृत (liver) के लिए लाभकारी है एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता (immunity) बढ़ाता है। पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर है।

₹ १२५
५०० मि.ली.

भूखवर्धक, रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, हृदय के लिए हितकर पंचरस

मधुमेह (diabetes), कैंसर, हृदय की रक्तवाहिनियों के अवरोध (coronary blockage), उच्च रक्तचाप (High B.P.), रक्त में वसा (fat) का बढ़ना आदि रोगों में लाभप्रद। पाचनशक्तिवर्धक, कृमिनाशक एवं रक्तशुद्धिकर अनुभूत रामबाण योग।

₹ २२५
४५० ग्राम

₹ २०
६५ ग्राम

सप्तधातुवर्धक बूटी

यह बूटी टूटी हड्डी को शीघ्र ही जोड़ने, कमजोरी दूर करने और वजन बढ़ाने में लाभदायी है। साथ ही स्नायु-संस्थान को सक्षम बनाये रखती है।

सौभाग्य शुंठी पाक

उत्तम बलवर्धक व वात, पित्त, कफ के रोग, बुखार (ज्वर), मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग एवं अन्य अनेक रोग नाशक।

₹ ६०
२०० ग्राम

ओजस्वी पेय
(Herbal Tea)

यह मेधाशक्ति, नेत्रज्योति व ओज वर्धक तथा जठराग्नि-प्रदीपक, हृदय-बलवर्धक, रक्तशुद्धिकर, अस्थि-पुष्टिकारक, पाचक व कृमिनाशक है।

केसर व सफेद मूसली युक्त
पुष्टि कल्प

यह अनुभूत कल्प स्वादिष्ट, पुष्टिकर तथा तेज, ओज, बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक है। संयम-ब्रह्मचर्य के पालन के साथ इसके सेवन से शरीर सुदृढ़ व सशक्त होता है।

₹ १९५
७५ ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Dec 2023

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२४)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर), पॉकेट कैलेंडर, डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। ८ कैलेंडर लेने पर ₹ २० की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ १००!
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १५.५० तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १४.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

षड्यंत्र के तहत पिछले करीब ११.५ वर्षों से कारागृह में रखे गये पूज्य बापूजी की निर्दोषता का ज्वलंत प्रमाण हैं 'दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर' में उपस्थित यह जनमेदनी

ऋषि प्रसाद के माध्यम से चहुँओर ज्ञान की गंगा बहाने का संकल्प लेते परोपकारी पुण्यात्मा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन व लोक कल्याण सेतु की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad Rishi Darshan Lok Kalyan Setu

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी